किसानों ने किया नयी तकनीकों से किये जा रहे धान, गन्ने व लाही के उत्पादन का अवलोकन

पंतनगर। 26 अक्टूबर, 2009। विश्वविद्यालय फार्म में आज किसानों को नयी तकनीकों से उगायी गयी धान, गन्ना व गन्ने के साथ लाही की सहफसली खेत के प्रक्षेत्रों का अवलोकन कराया गया। विश्वविद्यालय के कुलाति डा. बी.एस. बिष्ट भी इस अवसर पर उपस्थित थे। फार्म के पूर्वी प्रक्षेत्र बेनी के "एस" एवं "आर" खण्ड में लगभग 300 किसानों ने मुख्य कृषि अधिकारी, डा. ए.के. उपाध्याय के नेतृत्व में संसाधन संरक्षण तकनीक के अंतर्गत धान की सीधी बुआई द्वारा बीज उत्पादन के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया। उक्त तकनीक का खेत पर मुख्य महाप्रबन्धक, डा. ए.के. भारद्वाज तथा सह निदेशक, डा. विश्वनाथ द्वारा दृश्य प्रदर्शन व अवलोकन कराया गया।

कुलपति ने उपस्थित कृषकों को आह्वान किया कि विश्वविद्यालय फार्म द्वारा अपनायी गयी तकनीकों को अपने खेतों पर भी अपनायें, जिससे कि संसाधनों के संरक्षण के साथ–साथ पर्यावरण का भी संरक्षण किया जा सके। डा भारद्वाज ने उपस्थित कृषकों को बताया कि इस तकनीक द्वारा एक हैक्टेयर खेत में लगभग रू. 5000–6000 की लागत की बचत के साथ–साथ आने वाली फसल की कृषण क्रियाओं की लागत को भी कम किया जा सकता है। साथ ही इस तकनीक से कृषक कम समय में अधिक क्षेत्रफल की बुआई कर सकते हैं तथा समय की बचत का लाभ दूसरी फसल में उपयोग कर कृषि आय में वृद्धि कर सकते हैं। सीधी बुआई द्वारा धान की फसल रोपित धान की फसल के सापेक्ष 10–15 दिन पहले पककर तैयार हो जाती है, जिसका लाभ किसान धान के बाद की फसल को समय से बोकर (जैसे हरी मटर/गेहूँ की फसल) भी उठा सकते हैं। इस तकनीक से बोई गयी धान की फसल का अनुमानित उत्पादन 60–65 कुन्तल प्रति हैक्टेयर आंका गया है। कृषकों द्वारा उक्त तकनीक से की जाने वाली कृषण क्रियाओं की विस्तार से जानकारी ली गयी।

किसानों को उसी प्रक्षेत्र में फार्म द्वारा गन्ने की ग्रीष्मकालीन बुआई तकनीक से उगायी गयी फसल का अवलोकन भी कराया गया। खण्ड अधीक्षक, श्री आर.पी.एस. यादव ने कुलपति जी के साथ–साथ अन्य उपस्थित कृषकों को बताया कि फार्म पर प्रथम बार इस प्रकार की तकनीक अपनाई गयी है, जिसके अंतर्गत गेहूँ की कटाई के उपरान्त मई माह में गन्ने की बुआई की गयी। उन्होंने बताया कि अनुमानतः उक्त गन्ने का उत्पादन लगभग 450–500 कुन्तल प्रति हैक्टेयर होने की संभावना है। मुख्य महाप्रबन्धक फार्म ने बताया कि इस तकनीक को प्रसार प्रक्रिया के माध्यम से बढ़ावा देकर उत्तराखण्ड में गन्ने के घटते क्षेत्रफल में वृद्धि करने में किया जा सकता है। इस गन्ने का किसान अपने खेत के सीमित क्षेत्रफल पर गेहूँ कटाई के बाद लगाकर उससे उत्पादित गन्ने को बीज फसल के रूप में प्रयोग कर सकते हैं, जिससे गन्ने के उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है क्योंकि पेड़ी के गन्ने को बीज के रूप में प्रयोग करने से उत्पादन इसके अनुपात में कम होता है। शरदकालीन गन्ने की फसल में लाही को अंतः फसल के रूप में लगाये गये प्रक्षेत्र का भी किसानों ने अवलोकन किया। साथ ही इस तकनीक द्वारा गन्ना उगाने के साथ–साथ लाही को एक अतिरिक्त फसल के रूप में फसल ले सकने के लाभ के बारे में भी किसानों को जानकारी दी गयी जिसमें 15–16 कुन्तल लाही का उत्पादन किया जा सकता है। यह तकनीक विश्वविद्यालय फार्म पर इस वर्ष 58.00 हैक्टेयर क्षेत्र पर अपनाई गयी है। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठता तथा विश्वविद्यालय फार्म के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

सीधी बुआई तकनीक से बोई गई धान की फसल का अवलोकन करते कुलपति डा. बिष्ट, वैज्ञानिक एवं किसान